

Dr. Priti Ranjan

H. O. D history department

H. D jain college, ara

Notes for pg sem 1(cc1)

इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता (Objectivity) की समस्या पर विचार कीजिए।

भूमिका (Introduction):

इतिहास लेखन का मूल उद्देश्य अतीत की घटनाओं का सत्य स्वरूप प्रस्तुत करना है। परंतु यह कार्य सरल नहीं है, क्योंकि इतिहासकार स्वयं एक व्यक्ति होता है, जिसके अपने विचार, मूल्य, दृष्टिकोण और परिस्थितियाँ होती हैं। इसलिए इतिहास लेखन में पूर्ण **वस्तुनिष्ठता (Objectivity)** प्राप्त करना एक चुनौती बन जाता है।

वस्तुनिष्ठता का अर्थ है – किसी भी घटना या तथ्य को बिना किसी व्यक्तिगत, धार्मिक, राजनीतिक या भावनात्मक पक्षपात के, तटस्थ और निष्पक्ष दृष्टि से देखना।

वस्तुनिष्ठता की परिभाषा (Definition of Objectivity)

वस्तुनिष्ठता का अर्थ है – **“तथ्यों का वर्णन उसी रूप में करना जैसा वे वास्तव में घटित हुए।”**

- ब्रिटिश इतिहासकार **लेओपोल्ड वॉन रान्के (Leopold von Ranke)** ने कहा था –

“History should tell how it actually happened.”

(इतिहास को वैसा ही कहना चाहिए जैसा वास्तव में हुआ था।)

इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता की समस्या:

1. स्रोतों की सीमाएँ (Limitations of Sources):

ऐतिहासिक स्रोत अधूरे, पक्षपाती या विरोधाभासी हो सकते हैं। एक ही घटना के बारे में विभिन्न स्रोत अलग दृष्टिकोण देते हैं। इतिहासकार को इनमें से चयन करना पड़ता है, जिससे वस्तुनिष्ठता प्रभावित होती है।

2. इतिहासकार का दृष्टिकोण (Historian's Perspective):

इतिहासकार का अपना सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक या राजनीतिक दृष्टिकोण

उसके विश्लेषण को प्रभावित करता है। वह अनजाने में किसी वर्ग या विचारधारा का पक्ष ले सकता है।

3. **तथ्य और व्याख्या (Fact and Interpretation):**

इतिहास केवल तथ्यों का संग्रह नहीं, बल्कि उनकी व्याख्या भी है। व्याख्या में व्यक्तिगत मत शामिल होता है, जिससे पूर्ण वस्तुनिष्ठता कठिन हो जाती है।

4. **काल और समाज का प्रभाव (Influence of Time and Society):**

इतिहासकार जिस काल में रहता है, उसके विचार और मूल्य भी उसके लेखन को प्रभावित करते हैं। जैसे औपनिवेशिक काल में यूरोपीय इतिहासकारों ने भारतीय अतीत को पिछड़ा दिखाया।

5. **राष्ट्रीयता और भावनाएँ (Nationalism and Emotions):**

राष्ट्रवादी या सामुदायिक भावनाएँ इतिहासकार की दृष्टि को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने भारत के अतीत को गौरवशाली रूप में प्रस्तुत किया, जबकि औपनिवेशिक इतिहासकारों ने उसे पतनशील बताया।

6. **चयन की समस्या (Problem of Selection):**

इतिहासकार को अनगिनत घटनाओं में से चुनना पड़ता है कि कौन-सी महत्वपूर्ण हैं। यह चयन उसकी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है, जिससे निष्पक्षता प्रभावित होती है।

वस्तुनिष्ठता बनाम व्यक्तिनिष्ठता (Objectivity vs Subjectivity):

पक्ष वस्तुनिष्ठता (Objectivity) व्यक्तिनिष्ठता (Subjectivity)

अर्थ निष्पक्ष और तटस्थ दृष्टिकोण व्यक्तिगत भावनाएँ और दृष्टि

आधार तथ्य एवं प्रमाण अनुभव, विचार, मूल्य

उदाहरण रांके की ऐतिहासिक दृष्टि मार्क्सवादी या राष्ट्रवादी दृष्टि

आधुनिक दृष्टिकोण:

- आधुनिक इतिहासकार मानते हैं कि **पूर्ण वस्तुनिष्ठता संभव नहीं**, परंतु **‘सापेक्ष वस्तुनिष्ठता’ (Relative Objectivity)** प्राप्त की जा सकती है।
- इतिहासकार को अपने पूर्वाग्रहों की पहचान करनी चाहिए और विभिन्न दृष्टिकोणों से घटना का विश्लेषण करना चाहिए।
- **ई.एच. कार (E.H. Carr)** ने कहा –

“The facts speak only when the historian calls on them.”
अर्थात् इतिहासकार ही तथ्यों को अर्थ देता है, इसलिए पूर्ण
वस्तुनिष्ठता असंभव है, लेकिन तर्कसंगत संतुलन आवश्यक है।

निष्कर्ष (Conclusion):

इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता आदर्श है, परंतु व्यावहारिक रूप से सीमित है। इतिहासकार को अपने विचारों और स्रोतों की सीमाओं को समझते हुए यथासंभव निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

वस्तुनिष्ठता का अर्थ पूर्ण निष्पक्षता नहीं, बल्कि “ईमानदार तर्कसंगतता” है।
यही इतिहास लेखन की विश्वसनीयता और विद्वत्ता का आधार है।

संक्षेप में:

“इतिहास में पूर्ण वस्तुनिष्ठता असंभव है, परंतु उसकी ओर निरंतर प्रयास ही एक सच्चे इतिहासकार का धर्म है।”